हिमालयी
त्रैमासिक

बच्चों का अख़बार

RNI No. UTTHIN/2003/10745 वर्ष 09, अंक 97, पृष्ठ 8, देहरादून, मार्च–अप्रैल, 2019 1995 से सतत प्रकाशित

दीदी की चिट्ठी

प्यारे बच्चों,

आज माफ करना प्रभुवर मेरे...
आज कोई फूल नहीं तेरे चरणों में चढ़ाने को
आज बगिया का हर फूल आतुर है
शहीदों के शव पर चढ़ जाने को।

आशा करती हूँ तुम सब टीवी में समाचार देख रहे हो और हमारे वीर जवानों के साहस से प्रेरणा भी ले रहे हो। उनका अदम्य साहस, निडरता व देशभक्ति से हमको भी बहुत कुछ सीखना है। हमें अपना कार्य व जिम्मेदारी भी एक सैनिक की तरह ही निभानी चाहिए।

इस अंक में "गंगा की जैवविविधता" में तुम्हें गंगा के पादप परिवार, उनके महत्व व कार्यों को बता रहे हैं। यह जल शिक्षा है जिससे हम सबको अवगत होना है। अपने जल के बारे में जानना, उसकी सुरक्षा व संरक्षण करना बच्चों का अधिकार है। अपने संसाधनों के महत्व को जानो और उनसे प्रेम करो, मैं तो यही चाहती हूँ तुम सब से।

हमने बुलंदशहर (U.P.) के कुछ गांवों के स्कूलों (गंगा किनारे के) में बच्चों के साथ "गंगा की जैवविविधता" पर कार्यशालाऐं की थीं। बाद में बच्चों के विचार व उनकी सोच भी जाननी चाही। पृष्ठ सं. 5-6 में बच्चे गंगा को अपने स्तर से कैसे बचायेंगें बता रहे हैं। हम सबके प्रयास से ही गंगा माँ सुरक्षित रहेगी। गंगा को हम सबको जानना है क्योंकि हर व्यक्ति गंगा से धार्मिक व सांस्कृतिक रूप से जुड़ा है।

होली का त्यौहार है पर्यावरण का ध्यान जरूर रखना। ख्याल रहे तुम्हारी खुशी से प्रकृति को नुकसान ना पहुंचे। इसलिए हर्बल रंगों से ही होली खेलना। होली की बहुत-बहुत शुभकामनाऐं। तुम्हारे पत्रों का इन्तजार रहेगा।

तुम्हारी दीदी,
सुधा

स्वास्थ्य के रखवाले

पौष्क तत्व

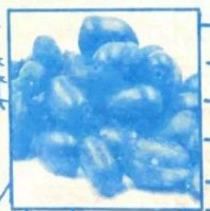

- जिंक
- लौह
- एंटीऑक्सीडेंट्स
- फ्लैवैनॉइड
- मैग्नीशियम
- फाइबर
- फास्फोरस
- कॉपर
- पोटेशियम
- सोडियम
- विटामिन C

देवताओं का फल जामुन

⊛ जामुन में शुगर की मात्रा कम होती है। यह स्टार्च को ऊर्जा में बदलने में मदद करता है। इस तरह रक्त में शक्कर की मात्रा कम हो जाती है। जामुन की पत्तियां, तने की छाल,

शेष पृष्ठ सं. 7 पर.....

विज्ञान के चमत्कार

शैवाल से आप क्या समझते हैं?

शैवाल पादप: पर्णहरित (chlorophyll) युक्त, ऊतक रहित (non-vascular), आत्मपोषी (autotrophic) तथा सेलूलोज भित्ति वाले होते हैं। इनका शरीर जड़, तना, एवं पत्तियों में विभक्त नहीं होता (thalloid) है। शैवाल ताजे जल, समुद्री जल, गर्म जल के झरनों, कीचड़ में तथा नदी, तालाबों में वास करते हैं। जलीय शैवाल (aquatic algae) हैं ओडोगोनियम, स्पाइरोगाइरा, कारा (chara) आदि।

अंतरिक्ष यात्रा में शैवाल का क्या उपयोग है?

अंतरिक्ष यान में लम्बी उड़ान के समय केबिन में ऐसी व्यवस्था रहनी चाहिए, जिससे यात्री को ऑक्सीजन व भोजन प्राप्त हो सके तथा कार्बनडाई-आक्साइड (CO_2) और अन्य बेकार पदार्थ बाहर निकल सके। क्लोरेला (chlorella) नामक शैवाल को केबिन के हौज में उगाकर अंतरिक्ष यात्री को प्रोटीन युक्त भोजन, जल और ऑक्सीजन सभी प्राप्त हो सकते हैं। ये शैवाल तीव्रता से प्रजनन करते हैं तथा कार्बन-डाई-आक्साइड का उपयोग करके भोजन बनाते हैं। CO_2 लेने के उपरान्त शुद्ध आक्सीजन छोड़ते हैं। प्रोटीन संश्लेषण के लिए नाइट्रोजन के स्रोत के रूप में ये शैवाल मूत्र (urine) तथा मल (faeces) से उत्पन्न पदार्थों का उपयोग कर लेते हैं।

पारा बहुत उपयोगी क्यों है? (mercury)

① पारा एक जहरीली धातु है फिर भी इसे बहुत सी दवाओं के निर्माण में इस्तेमाल किया जाता है।

② इसे तापमापियों (thermometers) और वायु दाबमापियों (baro-metus) में प्रयोग किया जाता है।

③ इससे बहुत सी कीटाणु नाशक औषधियां भी बनाई जाती हैं।

④ पेन्ट, कास्टिक सोडा के निर्माण में भी।

⑤ विद्युत उपकरणों में पारा का उपयोग होता है।

⑥ भारतीय महिलाओं द्वारा मांग भरने में उपयोग किया जाने वाला सिन्दूर पारे का ही एक मिश्रण है।

क्या पत्थर पर्यावरण को साफ करते हैं?

पत्थर बेजान होते हैं, हम सब यही सोचते हैं। यदि पत्थरों को रंग दो तो बहुत सुंदर लगते हैं। नहीं तो यूंही पड़े रहते हैं। यह बेजान पत्थर पर्यावरण का शुद्धिकरण करते हैं। है ना अचम्भे की बात। हाल ही में एक अध्ययन के दौरान यह बात पता चली है। पत्थर मुख्य ग्रीनहाउस गैस कार्बनडाईआक्साइड (CO_2) को अवशोषित करते हैं। हम सब जानते हैं इस गैस की वजह से ग्लोबल वार्मिंग दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। पृथ्वी गर्म हो रही है। अब पत्थरों को बेजान बेकार ना समझना। उनका भी पर्यावरण को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका है।

॥ नमामि गंगे ॥

जल शिक्षा

गंगा की जैवविविधता
(Biodiversity of Ganga)
(भाग-3)

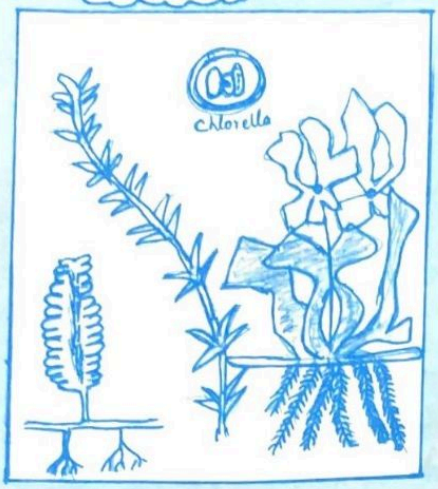

मैं गंगा माँ इस अंक मे तुम्हे अपने जलीय पादपो का गंगा की जैव विविधता (biodiversity) से संबंध बताऊंगी। इनकी वजह से मेरी जैव विविधता है और मैं जीवित भी हूँ, मेरी निर्भरता है इन पर। कैसे? आओ जाने। मैंने पिछले अंक मे बताया था कि कैसे मैं और मेरे जलीय जीव एक दूसरे पर निर्भर है। वैसे ही मेरे जलीय पौधो भी। जलीय पौधो को वैज्ञानिक भाषा मे जलोद्भिद (hydrophytes) कहते है। यह तीन प्रकार के होते है।

① जल प्लावी (floating plants) पौधे
② स्थिर प्लावी (fixed plants) पौधे
③ जल निमग्न (under water plants) पौधे

मैं तुम्हे इन पादपो के बारे मे इसलिए बता रही हूँ क्योंकि इनकी वजह से मेरा जल स्वच्छ रहता है और मेरे जल मे ऑक्सीजन की अधिकता रहती है साथ ही मेरे जलीय जीव भी जीवित रहते है।

जल प्लावी पौधे:

यह पौधे पानी की सतह मे तैरते रहते है। इन्हे प्रकाश संश्लेषण (photosynthesis) मे किसी तरह की कठिनाई नही होती क्योंकि यह सतह पर तैरते रहते है, और सूर्य का प्रकाश मिलता रहता है। इनकी पत्तियो की टहनियां खोखली होती है जिनमे हवा भरी रहती है। इस वजह से इनके पत्ते पानी मे आसानी से तैरते रहते है। उदाहरण जलकुम्भी (water hyacinth), club weed

स्थिर प्लावी पौधे:

इन पौधो की जडे जलाशय के तल मे कीचड़ मे धंसी होती है। इन पौधो का तना भी कीचड़ मे धंसा रहता है। तने से ही पत्तियां निकलती है और इनकी उण्डल काफी लम्बी होती है और पत्तिया जल की सतह तक पहुच जाती है। इस तरह यह तैरती रहती है। इन पौधो के तनो मे अनेक छिद्र होते है जिन्हे वायुकोष (air space) कहते है। इनमे वायु भर जाती है और इनके तने या वृन्त स्पंजी हो जाते है। और भार आधिक हो जाता है और यह उत्प्लावित होते रहते है। ताकि पत्तिया पानी की सतह तक पहुच सके। जैसे कमल और वॉटर लिली। कमल तलाब मे पाया जाता है।

जल निमग्न पौधे:

यह पौधे पानी के अंदर रहते है। इनकी पत्तियो की आकृति रिबन के समान, लचीली व नोकिली होती है ताकि वे पानी के बहाव को सहन कर सके। इन पत्तियो मे रन्ध्र (stomatae) नही होते वह पत्तियो की सतह से स्वास लेते है। यह पौधे जल को ऑक्सीजन देते है और इस तरह पानी के अन्दर रहने वाले जीवो को ऑक्सीजन मिलती है। उदाहरण हाइड्रिला (hydrilla), वालिसिनरिया (vallisneria)।

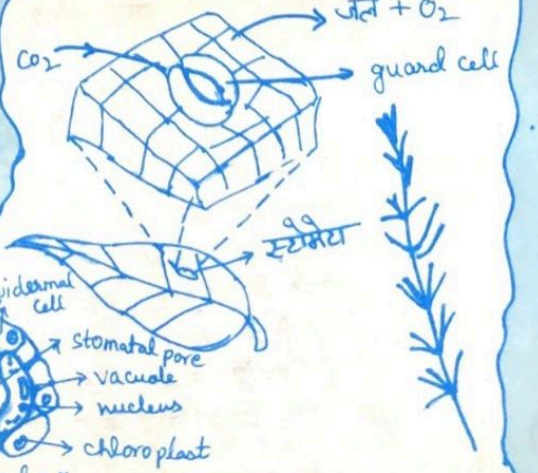

॥ नमामि गंगे ॥

जल प्लावी पौधे, स्थिर प्लावी पौधे व जल निमग्न पौधे अपना भोजन बनाते हैं व जल की स्वच्छता में सहयोग करते रहते हैं। तैरते हुए सूक्ष्म पादप जैसे शैवाल (algae), काई और जलमग्न मैक्रोफाइट (Sub-merged macrophytes) भी जल में रहते हैं और ऑक्सीजन मेरे जल को देते रहते हैं। इस तरह जलोद्भिद पौधे (hydrophytes), लवणोद्भिद पौधे (halophytes or mangroves) और समोद्भिद पौधे (mesophytes) भी गंगा की पादप सम्पदा हैं।

स्पाइरोगायरा (एक जलीय शैवाल)

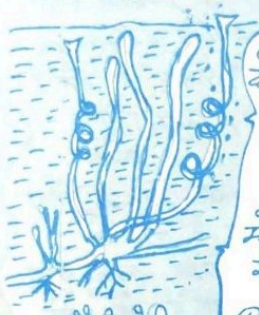

दोस्तो यह बात थी मेरे जल में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के जलीय पौधों की। अब बात करते हैं मेरे जलीय पौधों के विशेष गुणों की जिनकी वजह से मेरा जल स्वच्छ व निर्मल है और यदि उनको क्षति पहुंचती है तो समझना मेरा स्वास्थ्य खराब हो रहा है, मानि मेरा जल प्रदूषित हो रहा है। इन पौधों के जीवन में मेरा जीवन निहित है।

① जलीय पौधों की सतह पर वैक्स (wax) की पर्त होती है। यह पर्त बचाव करती है पौधों को सिकुड़ने, गीला व सड़ने से।

② जलीय पौधे हरे होते हैं। वे कार्बनडाईऑक्साइड, पर्णहरित (chlorophyll) जल व सूर्य के प्रकाश की सहायता से ग्लूकोज (भोजन) बनाते हैं। और इस प्रक्रिया में ऑक्सीजन निष्कासित करते रहते हैं। पौधों के खाना बनाने की प्रक्रिया को तुम मानव वैज्ञानिक भाषा में प्रकाश संश्लेषण (photosynthesis) कहते हो। तुम सब तो शिक्षित बच्चे हो। जानते हो कि प्रकाश संश्लेषण के लिए पौधों को प्रकाश की जरूरत है और यह प्रकाश जलीय पौधों को तब मिलेगा जब मेरा जल स्वच्छ, निर्मल व प्रदूषण रहित होगा। तब जाकर भोजन बनेगा दोस्तो।

③ जलीय पौधों की पत्तियों का आकार भी जल के अनुकूल ही है। जल निमग्न पौधों की पत्तियां लम्बी व लचीली होती हैं। बहते पानी में पानी के वेग व बहाव के अनुसार हिलती डुलती रहती हैं। तेज बहते पानी के बहाव से पत्तियां टूटती नहीं। उदाहरण हाइड्रिला, सिरेटोफिलम।

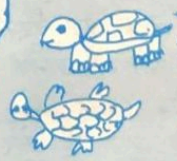

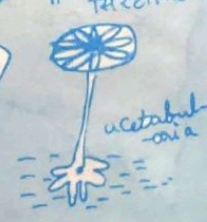

आशा करती हूँ अब तुम समझ गए होंगे कि मेरी जैव विविधता मेरे परिवार मानि जलीय जीव व जलीय पौधों के स्वस्थ रहने से है। वे स्वस्थ तब रहेंगे जब मेरा जल निर्मल व अविरल होगा। और यह तब होगा जब मुझे प्रदूषित नहीं किया जाएगा। अपने स्वार्थ व लाभ के लिए मानव मेरे जल को दूषित कर रहा है। कभी रासायनिक रसायनों को मेरे जल में डालकर, कभी त्यौहारों का सहारा लेकर सारा कूड़ा कचरा नदियों में बहाकर, खेतों में अप्राकृतिक खाद व कीटनाशक डालकर जो वर्षा में बहकर मेरे जल में आ जाते हैं। कहां तक कहूं। सोच रही हूं अगले अंक में इस पर ही चर्चा की जाए।

मुझे और मैला मत करो मेरे बच्चो! विनती करती हूं।

■■■ डा. सुधा शर्मा

Children feedback

बाल प्रतिक्रियाएं

बुलन्द शहर के गंगा किनारे के गांव के बच्चों के साथ गंगा की जैव सविविधता को लेकर कार्य किया गया था। बच्चों को गंगा की जैव विविधता संरक्षण व जीर्णोद्धार के लिए प्रेरित किया जा रहा है। बच्चों की प्रतिक्रियाऐ हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं निकल कर आई है।

आप गंगा को अपने स्तर से कैसे बचायेंगे?

हमें क्या नहीं करना चाहिए?

- हमें गंगा में प्लास्टिक व पॉलीथिन नहीं फेंकना चाहिए।
- हमें गंगा में कांच व इलेक्ट्रानिक सामान नहीं डालना चाहिए और ना ही आस-पास डालना है।
- हमें गंगा में फूल, पूजा सामग्री, राख व हवन सामग्री नहीं डालनी चाहिए।
- हमें गंगा में कपड़े (फटे-पुराने) नहीं डालने हैं।
- हमें गंगा में साबुन/शैम्पू से नहीं नहाना चाहिए।
- हमें गंगा में कपड़े नहीं धोने हैं।
- हमें गंगा में पशुओं को नहीं नहलाना चाहिए।
- हमें गंगा में मृत पशुओं को नहीं डालना है।
- हमें गंगा में ईंट, पत्थर, लकड़ नहीं फेंकने चाहिए।
- हमें गंगा के आस-पास गंदगी नहीं करनी चाहिए।
- हमें गंगा के आस-पास मल मूत्र नहीं करना चाहिए। गंगा किनारे शौचालय होने चाहिए।
- हमें गंगा के आस-पास के पेड़-पौधे नहीं काटने चाहिए।
- हमें गंगा किनारे बर्तन नहीं धोने चाहिए व गोबर भी ना डालें।
- गांव की व शहरों की नालियों को नदी में नहीं बहाना चाहिए। कई शहरों के नालों का पानी गंगा में जाकर मिलता है।
- हम गंगा में कैमिकल से बनी मूर्ति विसर्जित नहीं करेंगे।
- गंगा में तस्वीरें नहीं डालनी चाहिए।
- हमें मृत लोगों को गंगा में नहीं बहाना चाहिए।
- हमें खेतों में कीटनाशक दवाओं को नहीं डालना चाहिए। यह बहकर नदी में चले जाते हैं और जलीय जीवों को नुकसान पहुंचाते हैं।
- हमें गंगा में दूध व मिठाई नहीं डालनी चाहिए।
- हमें गंगा में सिक्के नहीं डालने चाहिए।
- हमें गंगा में वाहन नहीं धोने चाहिए।
- हमें गंगा में चप्पल लेकर नहीं जाना चाहिए।

हमें क्या करना चाहिए?

- ☒ हमें गंगा के आसपास कूड़ा साफ करना चाहिए।
- ☒ हमें गंगा के जीव जन्तुओं की रक्षा करनी चाहिए व उन्हें मारना नहीं चाहिए क्योंकि वे गंगा के जल की रक्षा करते हैं।
- ☒ हमें गंगा के आसपास पेड़ पौधे लगाने चाहिए।
- ☒ हमें कचरे को कचरेदान में डालना चाहिए ना कि गंगा में।

॥ समाप्ति गंगे ॥

- हमें गंगा के अन्दर साफ - सफाई करनी चाहिए। घाट पर सफाई कार्य करना चाहिए।
- कोई मनुष्य गंगा में गंदगी करता है तो उसे मना करना चाहिए और रोकेंगे और चेतित करेंगे न करे।
- कूड़े को कूड़ेदान में ही फेंकना चाहिए।
- गंगा के आस-पास शौचालय होने चाहिए व मल-मूत्र वहीं करनी चाहिए न कि गंगा के आस पास।
- हमें हमेशा कपड़े का थैला प्रयोग में लाना चाहिए।
- कारखानों से निकले जल को उचित उपचार करने के बाद ही नदियों में बहाना चाहिए। जिससे कि नदियों का जल दूषित ना हो। और कल कारखानों को शहर से दूर स्थापित करना चाहिए। फैक्ट्रियों को भी।

- हम अपने भाई बहन को भी गन्दगी नहीं करने देंगें और उन्हें समझायेंगें।
- गंगा में तस्वीर डालने के बजाय गड्ढे में गाड़ दें।
- हम बाहर वाले जो लोग आते हैं और गंदगी करके जाते हैं उन्हें जागरूक करेंगे।
- कछुओं को बचायेंगे और मारने से मना करेंगे।
- हमें गंगा घाट में कूड़ेदान लगा देने चाहिए।
- गंगा घाट पर सन्देश बोर्ड लगायेंगे ताकि यात्रियों को पता चले और जागरूक होंगे।

प्रतिभागी स्कूल

कक्षा -6,7,8,9,10,11,12 छात्र व छात्राऐं

① पूर्व माध्यमिक विद्यालय, उदयगढ़ी, बु॰शहर
② पूर्व माध्यमिक विद्यालय, हसनपुर बांगर, अनूपशहर
③ श्री रघुनाथ बारह सैनी इण्टर कॉलेज राजखाट, बु॰शहर

हम गंगा को साफ रखेंगे। उस पर गन्दगी नहीं करेंगे और न ही किसी को गंगा पर गन्दगी करने देंगे। हम हफ्ते में एक बार गंगा माँ की गन्दगी साफ करते थे, करते हैं और करते रहेंगे। क्योंकि वह हमारी माँ हैं हम गन्दगी को इकट्ठा करके गड्ढे में दबा देंगे जिससे कि वह इकट्ठा करने के बाद फिर हवा के कारण कहीं फिर से गंगा में ना चला जाऐ।

★ कु॰ मुस्कान, कक्षा-8, श्री रघुनाथ बारह सैनी इण्टर कॉलेज, राजखाट, बु॰शहर
गांव उमरगढ़ी बांगर

गंगा पर पांच मा यह: कूड़ेदान होने चाहिए तथा शव को गंगा में नहीं बहाना चाहिए।

★ अंजली कुमारी, कक्षा-8, R.B.S.I.C., राजखाट, बु॰शहर

गंगा में बहुत जानवर रहते हैं जो गंगा के अंदर की सफाई करते हैं। जैसे मछली, मगर, घड़ियाल। वे परेशान होंगे। ★ मधु कु॰ कक्षा-11, R.B.S.I.C, बु॰शहर

खबरें इधर उधर की...

पृष्ठ सं. 1 का शेष भाग ....

गुठली भी मधुमेह के उपचार मे लाभदायक है।

- जामुन मे लौह और जिंक अधिक होता है इसलिए इसे खाने से रक्त मे हीमोग्लोबिन **बढ़** जाता है।
- जामुन खाने से एसीडिटी और कब्ज मे फायदा मिलता है। क्योंकि इसमे फाइबर काफी होता है।
- जामुन मे एंटी ऑक्सीडेंट्स और फ्लैवेनोइड होते है। यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाते है। यह रक्त को शुद्ध करता है।
- जामुन मे विटामिन c और फाइबर होता है इसलिए यह नुकसान पहुंचाने वाले कोलेस्ट्रॉल एलडीएल को घटाता है।
- जामुन का सेवन शरीर के मैटाबॉलि--जम को बढ़ाता है। इस तरह शरीर मे फैट जमा नही होता और मोटापे और हृदय रोग मे फायदेमंद है।

हवाईजहाज जैसी मूछ वाले स्पेशल अंकल

बात हो रही है विंग कमांडर अभिनंदन जी की। तमिलनाडु के रहने वाले 35 वर्षीय अभिनंदन की गरिमा और निर्भीकता के क्या कहने। भारतीय वायुसेना पायलट विंग

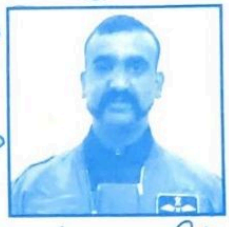

कमांडर अभिनंदन जी की बहादुरी हम सबके तन मन मे जोश भर रही है। उनकी मूंछो का स्टाइल भी उनकी वायुसेना के विमान की याद दिलाता है। वह एफ -16 विमान मार गिराने वाले भारतीय वायुसेना के पहले पायलट बन चुके है। पाक एयर फोर्स के तीन विमानो ने सुबह 27 फरवरी को करीब 10.05 बजे बैशेरा के कलाल इलाके मे राजौरी इलाके मे घुसपैठ की थी। भारत के वायु सेना के मिग विमानो ने इन विमानों को देख पीछा किया और पाकिस्तान के एफ -16 को एलओसी के पार जाते -2 मार गिराया। इस प्रयास में मिग 21 विमान एलओसी के पार चला गया। मिग-21 से बैशेरा से उन्होंने एलओसी के पार पाक अधिकृत कश्मीर मे लैंड किया और अभिनंदन को पाक सेना ने अपने कब्जे में ले लिया था।

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी

स्टैच्यू ऑफ यूनिटी दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा बन गई है। यह मूर्ति 182 मीटर ऊंची है। भारत में नर्मदा नदी के तट पर सरदार वल्लभभाई पटेल की मूर्ति का 31 अक्टूबर 2018 को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया।

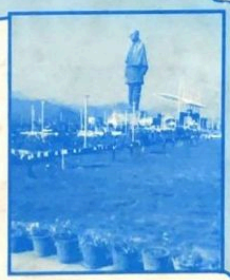

यह मूर्ति सिन्धु काल की तकनीक से बनाई गई है। मूर्ति चार धातुओं से बनी है। प्रतिमा में 85 प्रतिशत तांबे का प्रयोग किया गया है। मूर्ति को बरसो तक जंग नहीं लगेगा। चीन में भगवान बुद्ध की प्रतिमा 128 मीटर ऊंची है। फिर अमेरिका की 'स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी' 90 मीटर ऊंची और 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' 182 मीटर ऊंची है। यह मूर्ति 55 माह में तैयार की गई। अमेरिका की 'स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी' पांच साल में तैयार हुई थी। चीन में भगवान बुद्ध की प्रतिमा लगभग 90 साल में बनी थी, शिल्पकार राम सुथार व उनके पुत्र अनिल सुथार ने 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' को सिंधु घाटी सभ्यता की तकनीक से बनाया। गुजरात के कनहैयालाल एस.एस. राठौड़ की निगरानी में 55 माह में यह मूर्ति तैयार हुई है।

हिमालयी,
बच्चों का अखबार

RNI No. UTTHIN/2003/10745

कविताएं

हम भारत के बच्चे

हम भारत के बच्चे सारे
कितने कोमल कितने प्यारे
प्रातः उठ हरि ध्यान करें,
ईश विनय गुणगान करें
रगड़-रगड़कर रोज नहाएँ
शुद्ध बुद्ध निर्मल हो जाएँ
माता-पिता-गुरू के चरणों में
नित्य सदा प्रणाम करें।
पढ़ लिखकर गुणवान बनें,
साहसी वीर महान बनें,
उत्साह उमंग से काम करें,
समता स्नेह हृदय में भरें।

★ अंजली, कक्षा-8, शिव जू० हाई स्कूल, मालदेवता, दून

अच्छे बच्चे

हम तो अच्छे बच्चे हैं,
दिल के थोड़े सच्चे हैं,
विद्यालय हम जाते हैं
रोज नया कुछ पाते हैं
लिखते हैं और पढ़ते हैं
नई सीढ़ियाँ चढ़ते हैं।
अध्यापक हमें पढ़ाते हैं,
खेल नए सिखलाते हैं।
जब हम बड़े हो जाएँगे,
करके कुछ दिखलाएंगे,
अभी तो हम सब बच्चे हैं,
उम्र में बस कुछ कच्चे हैं।
हम तो अच्छे बच्चे हैं,
दिल के थोड़े सच्चे हैं।

★ सलोनी पंवार, कक्षा-8, शिव जू० हाई स्कूल, मालदेवता, दून

चुटकुले

★ एक बार दो दोस्त जा रहे थे। पहला पोता मैं खाली कॉपी देकर आया हूँ। दूसरा दोस्त बोला मैं भी खाली कॉपी देकर आया हूँ। पहला दोस्त चिंतित कहीं टीचर यह ना सोचे हमने नकल की है।

★ दीपिका कोठारी, कक्षा-8 शिव जू० हाई स्कूल, मालदेवता, दून

① पति : ये कैसा खाना बनाया है तुमने? बिलकुल गोबर जैसा....?
पत्नी : हे भगवान, इस आदमी ने हर चीज चख रखी है।

② सब्जीवाला सब्जी पर पानी छिड़क रहा था, काफी देर हो गई। कस्टमर गुस्से में बोला, भाई साहब अगर भिंडी को होश आ गया हो तो एक किलो दे दो.....

③ वाचमैन ने शेर के पिंजड़े को ताला नहीं लगाया।
अफसर : तुमने शेर के पिंजरे को ताला क्यों नहीं लगाया?
सरदार : क्या जरूरत है, इतने खतरनाक जानवर कौन कौन चुराएगा। ★ सौरव कंबोज गाजियाबाद, यूपी

BOOK POST CONTAINING PERIODICALS

हिमालयी बच्चों का अखबार

RNI NO. UTTHIN/2003/10745

सेवा में,

.....

.....

.....

.....

.....

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक डॉ अनिल प्रकाश जोशी द्वारा शिखर इन्टरप्राइजेज सत्यभामा निवास, तरूण विहार देहरादून दूरभाष : 0135–2532753 से मुद्रित तथा हैस्को ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ–अम्बीवाला, वाया प्रेमनगर, देहरादून से प्रकाशित।

सम्पादक : डा. सुधा कबटियाल
पता : डा. सुधा कबटियाल
ग्राम–मिंयावाला, पो.ऑ.–हर्रावाला,
देहरादून–248001

सहयोग टीम : रूचि जुयाल

हमारा पता : बच्चों का अखबार
हैस्को गाँव
ग्राम शुक्लापुर, पो.ऑ.–अम्बीवाला,
वाया प्रेमनगर, देहरादून–248001

सीमित प्रचार प्रसार हेतु

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
National Mission for Clean Ganga

सामार – जैव विविधता संरक्षण एवं गंगा जीर्णोद्धार द्वारा उत्प्रेरित एवं सहयोग